त्रैमासिक कृषि तकनीकी प्रसार पत्र

इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर, कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (छ.ग.)

अंक - 62 | जुलाई, अगस्त, सितम्बर 2013 | वर्ष- 15

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

संपादक मण्डल

संरक्षक
डॉ. एस.के. पाटिल
कुलपति,
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक
डॉ. जे. एस. उरकुरकर
निदेशक विस्तार सेवाएं,
रायपुर (छ.ग.)

उत्प्रेरक
डॉ. अनुपम मिश्रा
आंचलिक परियोजना निदेशक
जोन-7, भा.कृ.अनु.प.,
जबलपुर (म.प्र.)

सह उत्प्रेरक
डॉ. सी. आर. गुप्ता
अधिष्ठाता
कृ. महा., बिलासपुर (छ.ग.)

प्रकाशक
डॉ. रामनिवास शर्मा
कार्यक्रम समन्वयक,
कृ. वि. केन्द्र, बिलासपुर

संपादक
डॉ. दिनेश कुमार शर्मा
वैज्ञानिक,
कृषि प्रसार शिक्षा, कृ. वि. केन्द्र

सह-संपादक
श्रीमती निवेदिता पाठक
तकनीकी सहायक, कृ. वि. केन्द्र

किसानों का मितान
कृषि विज्ञान

विपुल धान उत्पादन की एस.आर.आई. (श्री) पद्धति

यह धान उत्पादन की नई प्रचलित विधि है । जिसमें कम दिन की नर्सरी(10 से 12 दिन) पौध संख्या, पौधों से पौधों की दूरी, खरपतवार नियंत्रण, पोषक तत्व एवं जल प्रबंधन आदि को समन्वित रुप से इस पद्धति द्वारा अपनाया जाता है । दूसरे शब्दों में श्री पद्धति धान उगाने की नई पद्धति है, जिसमें कम पानी की अवस्था में पौधों की वृद्धि व विकास के लिये उचित वातावरण प्रदान कर धान की परंपरागत पद्धति की अपेक्षा अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है ।

श्री पद्धति के मुख्य घटक निम्नानुसार हैं –

1. पौध की शीघ्र रोपाई – 10 से 12 दिन की पौध को मृदा सहित नम युक्त खेत में रोपाई करें ।
2. प्रति हिल एक पौध रोपण – इस पद्धति में प्रति हिल एक पौधा रोपना चाहिए । पौधे आपस में 25 से.मी. की दूरी पर वर्गाकार पद्धति में रोपाई करना चाहिए । जिससे खरपतवार नियंत्रण करने व अन्य कार्य में सुगमता रहे ।
3. खेत में उचित नमी बनायें रखना – इस विधि में खेत में पानी का भराव न करके उचित नमी बनाये रखना चाहिये । तथा फूल अवस्था के बाद 1 से 3 से.मी. पानी रखा जाता है । कटाई के 15 दिन पूर्व जल निकासी कर दें ।
4. नीदा नियंत्रण – इस विधि में कोनो विडर द्वारा कतार के बीच में चलाया जाता है । जिसके अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं ।

श्री पद्धति को अपनाने के मुख्य लाभ –

1. नर्सरी हेतु धान बीज की कम मात्रा का लगना ।
2. प्रति हे. रोपाई में कम खर्च ।
3. कम पानी की मात्रा लगना ।
4. पौध से पौध की दूरी अधिक होने के कारण कोनोवीडर चलाने में सुगमता ।
5. रासायनिक खाद की बचत ।

श्रीमती शिल्पा कौशिक, डॉ. आर.एन. शर्मा

वर्षा ऋतु में शुद्ध पेय जल

वर्षा ऋतु में मौसम में नमी कई बिमारियों को साथ लेकर आती है। इनमें से प्रमुख है अतिसार, पीलिया, टायफाईड, हैजा। जिसका प्रमुख कारण है गंदी नालियों का पानी नालों, तालाबों में जाकर पानी को दूषित कर देता है। इनकी रोकथाम के लिये घर के आसपास की सफाई के साथ-साथ पीने के पानी का शुद्धिकरण अनिवार्य है। मनुष्य को प्रतिदिन 8-10 गिलास पानी अनिवार्य होता है जिसे साफ व शुद्ध होना चाहिये। ग्रामीण स्तर पर शुद्ध पेय जल प्राप्ति के उपाय -1. पीने के पानी का साधन शौचालय, गाय कोठा, कूड़ा करकट, घुरूवा से 30 फीट दूर होना चाहिये। 2. गांव के कुओं को साल में 1 बार लाल दवा पोटाश अथवा ब्लीचिंग पाउडर से साफ करना चाहिये। 3. पानी को साफ मलमल कपड़े की 4 परत से छाने व पानी निकालने का बरतन अलग से हैंडिल युक्त हो।

विस्तृत जानकारी हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क करें ।
डॉ. रामनिवास शर्मा , कार्यक्रम समन्वयक

खरीफ सब्जियों की कृषि कार्यमाला

सब्जी	बोने का समय	बीज दर/हे.	अंतरण	खाद की मात्रा/हे.				औसत उत्पादन क्विं./हे.
				नत्रजन कि.ग्रा.	स्फुर कि. ग्रा.	पोटाश कि.ग्रा.	गोबर खाद टन	
टमाटर	जून-जुलाई अक्टूबर-नवम्बर	150-500 ग्रा.	60×45 से.मी.	100	50	50	25	250-500
बैंगन	जून-जुलाई सितंबर-अक्टूबर	250-500 ग्रा.	90×60 से.मी.	100	50	50	20-25	150-900
मिर्च	जून-जुलाई अक्टूबर-नवम्बर	700-900 ग्रा. संकर 250 ग्रा.	60×45 से.मी.	125	70	55	20-25	170-200 200-300
भिन्डी	जून-जुलाई	8-10 किग्रा.	30×10 से.मी.	60	35	35	25	100
लौकी	जून-जुलाई	4-5 कि.ग्रा.	60×2.5 से.मी.	60	80	20	20	200-300
कद्दू	जून-जुलाई फरवरी-मार्च	4-6 कि.ग्रा.	पौध- 75 से.मी कतार-1.5 मी.	50	40	40	25	200-250
करेला	जून-जुलाई फरवरी-मार्च	5-6 कि.ग्रा.	पौध- 50 से.मी. कतार-2 मी.	75	60	50	15	150-175

देवेन्द्र उपाध्याय, विषयवस्तु विशेषज्ञ उद्यान

धान के प्रमुख रोग, कीट एवं प्रबंधन

रोग का नाम	लक्षण	प्रबंधन
झुलसा (ब्लास्ट)	रोग की शुरुवात में लक्षण नीचे की पत्तियों पर हल्के बैंगनी रंग के छोटे-छोटे अण्डाकार धब्बे बनते हैं, जो धीरे-धीरे बढ़कर आंख के आकार की अर्थात बीच में चौड़ी तथा किनारों पर सकरी हो जाती है। इन धब्बों का बीच का रंग राख के रंग का व परिधि गहरे भूरे रंग की होती है। अनुकूल परिस्थिति में धब्बों का आकार व संख्या में वृद्धि तीव्र गति से होती है। बाद में ये धब्बे आपस में मिल जाते है तथा पत्तियां झुलसी हुई दिखाई देती है। रोग का प्रभाव पत्तियां, बाली, बाली की निचली गांठ/गरदन पर भी होता है। रोग के लक्षण बुवाई के 15 दिन बाद देखे जा सकतें है।	01. समय पर बुआई एवं संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें। 02. बम्लेश्वरी, कर्मा मासूरी, आदित्य, IR 64ए दुर्गेश्वरी आदि किस्मों का प्रयोग करें। 03. ट्राइसाइक्लाजोल दवा की 6 ग्रा. प्रति 10 ली. पानी या टेबुकोनाजोल दवा का 1.5 मि .ली./ली. पानी की दर से घोल बनाकर 12-15 स्प्रेयर /एकड़ तथा रोग की तीव्रता के अनुसार 12-15 दिन के बाद दुबारा छिड़काव करें।
शीथ झुलसन	तनें पर अनियमित आकार के गहरे भूरे किनारों वाले धब्बे बनतें है। शुरुआत में इसका रंग हरा मटमैला से तामिया होता है बाद में बीच का भाग भी मटमैला हो जाता है। अनुकूल परिस्थितियों में ये लक्षण पत्तियों पर हल्के भूरें मटमैले रंग की पट्टियों के रुप में दिखाई पड़ते है। यह बिमारी खेत में कंसे निकलने की अवस्था से गभोट की अवस्था तक ज्यादा दिखने को मिलती है।	01. बम्लेश्वरी , दुर्गेश्वरी आदि किस्मों का प्रयोग करें। 02. हेक्साकोनाजोल या प्रोपीकानॉजोल दवा की 1मि.ली./ली. पानी की दर से घोल बनाकर 12-15 स्प्रेयर/एकड़ तथा रोग की तीव्रता के अनुसार 12-15 दिन के बाद दुबारा छिड़काव करें।
तनाछेदक	कीट की इल्ली फसल के कंसा एवं गभोट अवस्था में तने के अंदर घुसकर इसे खाती है जिससे तना व सूखी बालियां बनती है जो खीचने पर आसानी से बाहर निकल जाती है। प्रारंभ में प्रभावित पौधे मुरझायी हुई दिखाई देती है।	01. किस्म सस्यश्री, विकास आदि किस्मों का प्रयोग करें। 02. कार्ट्राफ हाइड्रोक्लोराइड 4 जी. 25 किलों या फिप्रोरोनिल 0.3 जी. 25 किलो या क्लोएट्रीनलीप्रोल 0.4जी. 10 किलों/हे. की दर से छिड़काव करें।

विनोद निर्मलकर, विषयवस्तु विशेषज्ञ, पौधरोग

वर्षा ऋतु में स्वस्थ रहने एवं बिमारियों से बचाव हेतु कुछ सामान्य किन्तु आवश्यक उपाय

वर्षा ऋतु में शरीर दो विरोधाभासी स्थितियों से गुजरता है। एक ओर तीव्र उमस, गर्मी, बेचैनी तथा दूसरी ओर घनघोर मूसलाधार बारीश से नमी, सीलन का स्वाथ्य पर बुरा असर पड़ता है। लम्बे समय तक सूर्य के दर्शन न होने से पाचन तंत्र पर बुरा असर पड़ता है। वर्षा ऋतु में अपनी दिनचर्या नियमित रखकर खानपान, आचार व्यवहार, वस्त्रों व आस-पास की सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

पेय जलः- दूषित जल पीलिया, टायफाइड, हैजा, पेचिश जैसी बीमारियों का जन्म होता है। अतः शुद्ध जल का सेवन करें।

वर्षा ऋतु में पेय जल व्यवस्था- • ग्रामवासी पीने हेतु हैण्डपम्प के पानी का उपयोग करें। • जिस स्त्रोत से पानी भरा जा रहा है वहां आस-पास को साफ रखें। ➲ पानी का बरतन ढक कर रखें एवं बरतन को नियमित रुप से साफ करें। • हमेशा हाथ धोकर ही पानी निकालें। • पानी छान कर भरें व उसमें क्लोरिन की गोलीयां डाले। ➲ पानी निकालते समय अलग बरतन से निकाले हाथ न डुबोयें।

वर्षा ऋतु में आहार व्यवस्था- • सब्जियों व फलों को अधिक मात्रा के पानी में या गुनगुने पानी में धोये। • सब्जियों में लौकी, पालक, कद्दू, परवल, गिलकी, टिंडा, बैंगन, करेला आदि प्रयुक्त करें। • गेहूँ, उड़द, जौ का प्रयोग अधिक करें एवं चावल का प्रयोग कम करें। • दही का उपयोग काली मिर्च व नमक डालकर करें। • मौसमी फलों का प्रयोग करें। • छिलके वाली मूंगदाल को आहार में सम्मिलित करें। • गरिष्ठ भोजन, बासी भोजन का सेवन न करें। • हाट बाजार की खाने की वस्तुओं से परहेज रखें।

विहार :- • नहाने के पूर्व शरीर में तिल तेल की मालिश करें। • शरीर को साफ रखें तथा प्रतिदिन स्नान अवश्य करें। • शरीर को स्वच्छ व सूखा रखें। • अंधेरे में टार्च साथ में आवश्यक रुप से करें। • मच्छरदानी का प्रयोग करें। • जमीन में शयन न करें। • दिन में सोना हानिप्रद है। • पानी बरसते समय छाता बरसाती अवश्य प्रयुक्त करे। • नंगे पैर घर से बाहर न निकलें।

स्वच्छता - • घर के आस-पास गन्दा पानी न जमा होने दें। • जमा पानी में बी.एच.सी. का छिड़काव करें। • गौशाला की नियमित सफाई करें व कचरा घर से दूर में फेंकें। • रसोई घर को नियमित रुप से साफ करें व भोज्य पदार्थो को ढंक कर रखें। • वर्षा ऋतु में कपड़ों में सीलन के कारण गन्ध आने लगती है, धूप निकलने पर इन्हे धूप में कुछ देर रखें। • प्रतिदिन पहने जाने वाले वस्त्रों को साफ करके पहने। • घर में पोछा लगाते समय पानी में फिनाइल डालें। • वर्षा ऋतु में घर में जाले अधिक लगते है इनकी नियमित सफाई करे।

श्रीमती निवेदिता पाठक, डॉ. किरण गुप्ता, डॉ. आर.एन. शर्मा

सेवारत कर्मचारियों के लिये प्रशिक्षण

	विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
कृषि अधिकारी	-	-	-	2	4	50
आंगन बाड़ी कार्यकर्त्ता	-	-	-	1	2	20
आंगन बाड़ी सहायिका	-	-	-	1	2	25
कृषक संगवारी (लगभग)	-	-	-	16	16	-
आत्मा (कृषक)	1	1	38	-	-	-

कृषक व ग्रामीण महिलाओं एवं युवाओं के लिये प्रशिक्षण

	विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
फसल उत्पादन	3	3	76	3	6	60
कृषि विस्तार	1	1	10	3	6	80
गृह विज्ञान	3	4	49	4	8	80
उद्यानिकी	-	-	-	3	6	62
पौध रोग	1	1	13	3	6	58
ग्रीष्मकालीन जुताई (निकरा)	1	1	13	2	4	41

प्रक्षेत्र अनुसंधान परीक्षण

फसल	तीन माह की गतिविधियां	
	परीक्षण	लाभान्वित
1. धान की बुवाई के पूर्व खरपतवारनाशी का प्रयोग का आंकलन	1	4
2. धान में हरी खाद का प्रयोग का आंकलन	1	4
3. धान में नीम लेपित प्रयोग का आंकलन	1	4
4. धान में जीवाणु जनित झुलसा का प्रबंधन एवं आंकलन	1	4
5. सब्जियों की नर्सरी में रोग एवं कीट का प्रबंधन	1	4
6. मिर्च -इंदिरा 1 किस्म में पत्तियों से संबंधित बीमारियों के प्रभाव एवं आंकलन	1	4
7. सेवंती में बुवाई तिथियों का उत्पादन प्रभाव का आंकलन	1	4
8. कुपोषण से बचाव हेतु प्रोटीन की अधिकता वाले आहार का मुल्यांकन	1	4
9. विटामीन 'ए' की कमी की पूर्ति करने हेतु विटामीन 'ए' की अधिकता बाबत्।	1	4
10. लौकी में उत्पादकता वृद्धि हेतु बोरान तत्व के महत्व का आंकलन	1	4

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल	तीन माह की गतिविधियां	
	लाभान्वित	क्षेत्र / हे.
1. अरहर- राजीव लोचन प्ब ाृ	13	5.0
2. तिल- टी.के.जी.-305	13	5.0
3. धान - (श्री पद्धति) दुर्गेश्वरी	13	5.0
4. मशरुम उत्पादन	06	-
5. गृह वाटिका	06	-
6. धान (स्वर्णा) में झुलसा एवं तनाछेदक के प्रबंधन हेतु	15	5.0

सामयिक सलाह - 2013

जुलाई

फसलोत्पादन :

- ★ छिड़काव पद्धति से धान की बुवाई पहली वर्षा आने पर तुरंत करें। रोपाई पद्धति के लिये 20-30 दिन की रोपणी का प्रयोग करें। रोपाई के लिए 15 दिन पहले हरी खाद को जमीन मे मिला दें फिर मचाई करें।
- ★ सीधे बोये गये धान के खेत में पानी की उपलब्धता के अनुसार बियासी करें। छिड़काव एवं कतार बोनी में नींदानाशक दवा का उपयोग करें।
- ★ सोयाबीन ,अरहर ,अरण्डी ,तिल ,मूंगफली ,कपास की बुवाई 15 जुलाई तक पूरी करें।
- ★ मेड़ पर दलहनी ,तिलहनी एवंचारे वाली फसलों की बुवाई।

उद्यानिकी :

- ★ आम ,आंवला ,अमरूद , चीकू ,कटहल आदि फल वृक्षों में खाद एवंउर्वरक देने का कार्य पूरा करें।
- ★ नये फल वृक्षों को लगाने का कार्य आरंभ करें।
- ★ फल वृक्षों के पास बने थालों की भरपायी करें एवं बगीचे में जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- ★ केले के पौधों की रोपायी का कार्य आरंभ करें। पुराने केले के पौधों के बगल में निकलने वाले सकर को काट दें।
- ★ टमाटर ,बैगन ,मिर्च , फूलगोभी की रोपणी तैयार करें। फूलगाभी की अगेती किस्म की तैयार पौध की रोपाई करें।
- ★ कद्दूवर्गीय सब्जियों की बोआई करें तथा टमाटर , बैगन मिर्च आदि सब्जियों के तैयार पौधों की रोपाई करें।
- ★ धीक्वांर ,तीखुर ,लेमन घास ,ब्राम्ही ,सतावर , सर्पगंधा , कस्तूरी भिन्डी आदि की बुवाई करें। केवांच बेल को सहारा दें।
- ★ पूर्व में लगाई गई सफेद मूसली की निदाई गुडाई करें। मेंथा की पहली कटाई करें

पशुपालन :

- ★ पशुओं हरा चारा खिलाया जाये तथा गलघोंटू बीमारी से बचाव हेतु माह के अंत तक टीका करण अवश्य करा दें।
- ★ प्रतिदिन दूध निकालने पूर्व दूध की बाल्टी की सफाई क्लोरीन के पानी से या गरम पानी से करें।
- ★ गाय भैंस को औसत पोषण पर लगभग 27 से 28 ली. पानी की आवश्यकता जीवन निर्वाह हेतू तथा प्रति किलोग्राम दुग्ध उत्पादन के लिए लगभग 3 लीटर पानी की आवश्यकता होती है।

अगस्त

फसलोत्पादन :

- ★ गन्ना फसल में पायरिला नामक कीट का प्रकोप दिखे तो एमिडाक्लोप्रिड मात्रा 125 मि.ली. से 150 मि.ली. प्रति है. का छिड़काव करें।
- ★ धान की रोपाई 10 अगस्त एवं बियासी एवं चलायी कार्य 15 अगस्त तक पूर्ण करें।
- ★ धान एवं तिल, कपास, मक्का एवं अरण्डी फसलों में नत्रजन की अनुशंसित मात्रा का उपयोग करें।
- ★ धान में कीट नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस 36ई.सी. 750 मि.ली. 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति है. के हिसाब से छिड़काव करें

उद्यानिकी :

- ★ नये फल बाग की रोपाई यदि नहीं पूरा कर पाये हैं तो उसे पूरा करें।
- ★ नर्सरी में बडिंग एवंग्राफ्टिंग द्वारा नये - नये पौधे तैयार करने का कार्य चालू रखें।
- ★ कद्दूवर्गीय फसलों 25-30 कि.ग्रा. यूरिया प्रति है. की दर से डालें तथा लाल कीड़े से बचाव हेतु कार्बोरिल पावडर 1.5 कि.ग्रा. प्रति है. भुरकाव करें।
- ★ अदरक एवं हल्दी में पौध गलन की रक्षा हेतु ब्रासिकाल 1.5 ग्राम लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कें।
- ★ रोजा घास तथा अश्वगंधा की रोपाई करें। अन्य औषधीय फसलों में निंदाई गुड़ाई कर खाद डालें। जल निकासी की व्यवस्था करें।

पशुपालन :

- ★ गाय ,भैस ,भेड या बकरी यदि गर्मी में आयी हो तो उन्हे प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से गर्भित करा दिया जाये। पशुओं में किसी भी तरह के रोग के लक्षण दिखे तो अपने नजदीकी पशु चिकित्सालय की मदद लें।
- ★ मुर्गी घर के बिछावन को सूखा एवं धूल रहित रखें।
- ★ मुर्गियों को संतुलित आहार की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

सितम्बर

फसलोत्पादन :

- ★ धान में किस्म के अनुसार गभोट अवस्था(पाटरियाने की अवस्था) में यूरिया की शेष मात्रा कतार में डालें।
- ★ धान तथा अन्य खरीफ फसलों में आवश्यकता अनुसार नींदा नियंत्रण करें।
- ★ धान में फफूंदी जनित झुसला व शीथ गलन भूरा धब्बा रोग नियंत्रण हेतु एक किलोग्राम कार्बेडाजिम या हिनोसान (750 ग्राम दवा) 650 ली.पानी में घोलकर प्रति हे. छिड़काव करें। यदि फुदका कीट का प्रकोप दिखे तो मोनोक्रोटोफास 36 ई. सी . का 750 मि.ली. प्रति है. के हिसाब से छिड़काव करें।
- ★ मक्के की संकर किस्मों में 25 से 30 किलोग्राम नत्रजन नर मंजरी बनते समय प्रयोग करें। माह के अंत में कुलथी ,तोरिया व रामतिल की बोवाई करें।
- ★ इस माह में सोयाबीन की फसल में गर्डल बीटल कीड़े के प्रकोप की संम्भावना रहती है। अतः कीट पर विशेष निगरानी करें व नियंत्रण करें।

उद्यानिकी :

- ★ अदरक एवंहल्दी में मिट्टी चढाये, पानी दें।
- ★ आम में बोर्डो पेस्ट का लेप लगायें।
- ★ गोभी की अगेती फसल में निदाई गोड़ाई कर नत्रजन 40 किलाग्राम प्रति है. दें।
- ★ पुष्प प्राप्त करने के लिए गैलेडियोलाई के कंदो की बुआई करें। गोबर खाद के साथ 10 ग्राम नत्रजन 20 ग्राम स्फुर एवं 20 ग्राम पोटाश प्रति वर्ग मीटर में छिड़काव करें।
- ★ गेंदा मे पिंचिंग (फुनगी की कटाई) की प्रक्रिया अपनावें
- ★ सभी औषधीय पौधोंकी कीट व्याधियों से रक्षा करें। वर्षा न होने की दशा मे सिंचाई करें।

पशुपालन :

- ★ भैसों में व्यात का समय हो गया है। गर्भवती भैसों को पौष्टिक दलहनी चारे के आलावा ,खनिज लवण व विटामिन युक्त आहार दें।
- ★ भेड-बकरियों को नमी युक्त फर्श पर न रखा जाये।
- ★ मुर्गियों को संतुलित आहार की व्ववस्था सुनिश्चित करें।

प्रस्तुत लेखों पर संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है ये लेखक के स्वयं के विचार हैं। - संपादक

डॉ. दिनेश कुमार शर्मा
प्रमुख वैज्ञानिक, कृषि प्रसार शिक्षा
कृषि विज्ञान केन्द्र बिलासपुर (छ.ग.)

बुक-पोस्ट

भारत शासन सेवार्थ

सेवा में,
श्रीमान्/डॉ. _____

_____

_____

_____

प्रेषक -
कार्यक्रम समन्वयक,
कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (छ.ग.)

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, सरकण्डा, बिलासपुर (छ.ग.)
फोन : (07752) 255024

मुद्रण, बिलासपुर- 9200340414

किसानों का मितान - कृषि विज्ञान

सदस्यता शुल्क 25 रू. वार्षिक